पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग
द्वारा निर्धारित
अक्तूबर - नवंबर पाठ्यक्रम के अनुरूप

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी

कविता - हम राज्य लिए मरते हैं

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के इतिहास में खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि थे । गुप्त जी की कविताओं में स्वदेश प्रेम, मानव प्रेम, सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता की भावना है। उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं का आधार पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथानकों को बनाया। गुप्त जी ने नारी को अबला रूप से मुक्त करके उसे लोक सेविका तथा स्वाभिमानिनी के रूप में प्रस्तुत किया । प्रस्तुत भावपूर्ण गीत गुप्त जी के प्रसिद्ध महाकाव्य ' साकेत ' के नवम् सर्ग से लिया गया है। ' साकेत ' की नायिका उर्मिला यहां राज्य के कारण हुए गृह - कलह से दुःखी है। वह किसानों के शांतिपूर्ण जीवन की प्रशंसा करती हुई कहती है कि वास्तविक राज्य हमारे किसान ही करते हैं ।

हम राज्य लिए मरते हैं ।
सच्चा राज्य परन्तु हमारे कृषक ही करते हैं ।
जिनके खेतों में है अन्न,
कौन अधिक उनसे संपन्न ?
पत्नी सहित विचरते हैं वे, भव वैभव भरते हैं,
हम राज्य लिए मरते हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी की पाठ्यपुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में से ली गई हैं । इन पंक्तियों में श्री राम के भाई लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला राज्य के कारण पैदा हुए गृह - कलह से दुःखी होकर किसानों के शान्तिपूर्ण जीवन की प्रशंसा कर रही है ।

व्याख्या : उर्मिला कहती है कि हम आपस में राज्य के लिए लड़ते झगड़ते रहते हैं और राज्य के कारण उत्पन्न गृह - कलह से दुःखी रहते हैं लेकिन सच्चा राज्य तो हमारे किसान करते हैं । उर्मिला किसानों के खुशहाल और शान्तिपूर्ण जीवन की प्रशंसा करते हुए कहती है कि जिन किसानों के खेतों में अनाज पैदा होता है, उन से अधिक संपन्न (धनवान) और सुखी और कौन हो सकता है ? अर्थात सबसे अधिक सुखी एवं धनवान अनाज पैदा करने वाले किसान ही होते हैं । किसान अपनी पत्नी एवं परिवार के साथ रहते हैं। वे अपने परिवार के साथ स्वतन्त्रता और

आनन्द से घूमते हैं। किसान भव - वैभव अर्थात संसार की सारी खुशियाँ हासिल करते हैं । लेकिन एक हम हैं जो राज्य के लिए आपस में लड़ते - झगड़ते रहते हैं ।

वे गोधन के धनी उदार,
उनको सुलभ सुधा की धार,
सहनशीलता के आगर वे श्रम सागर तरते हैं ।
हम राज्य लिए मरते हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी की पाठ्यपुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में से ली गई हैं। इन पंक्तियों में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला किसानों के खुशहाल एवं मेहनत से भरे जीवन की प्रशंसा कर रही है ।

व्याख्या : उर्मिला कहती है कि किसानों के पास गोधन अर्थात गाय रूपी धन होता है। किसान बड़े दिल वाले, उदार एवं सरल होते हैं । किसानों को गाय का दूध बड़ी सरलता से प्राप्त हो जाता है जो अमृत की धारा के समान मधुर और गुणकारी होता है । किसान बहुत सहनशील होते हैं। वे धीरज रखकर और कड़ी मेहनत करते हुए जीवन रूपी सागर को पार करते हैं। एक तरफ हम हैं जो राज्य के लालच और अभिमान में ही लड़ते - मरते रहते हैं ।

यदि वे करें उचित है गर्व,
बात बात में उत्सव - पर्व,
हमसे प्रहरी रक्षक जिनके, वे किससे डरते हैं ?
हम राज्य लिए मरते हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में से ली गयी हैं । इसमें कविता की नायिका उर्मिला ने किसानों के जीवन को राज्य के अधिकारियों के जीवन से उत्तम माना है ।

व्याख्या : उर्मिला कहती है कि यदि किसान अपने इस खुशहाल एवं शान्तिपूर्ण जीवन पर गर्व करते हैं, तो उनका अपने ऊपर गर्व करना उचित है। किसान हर अवसर को त्योहार की तरह मनाते हैं और समारोह करते हैं। वे हमेशा नाचते - गाते और आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। जिन किसानों की रक्षा हम जैसे पहरेदार अर्थात राजा और हमारी सेना करते हैं, उन्हें किसी से डरने और किसी बात की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। किसान निडर होकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं । इसके विपरीत हम जो राज्य के अधिकारी हैं, राज्य हासिल करने के लिए आपस में लड़ते - झगड़ते रहते हैं ।

करके मीन मेख सब ओर,
किया करें बुध वाद कठोर,
शाखामयी बुद्धि तज कर वे मूल धर्म धरते हैं ।
हम राज्य लिए मरते हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी की पाठ्यपुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में से ली गई हैं। इसमें कविता की नायिका उर्मिला किसानों द्वारा धर्म के मूल रूप को अपनाने की बात कर रही है।

व्याख्या : उर्मिला कहती है कि विद्वान अथवा ज्ञानी लोग हर बात में मीन - मेख करते हैं। वे हर बात में दोष निकाल कर व्यर्थ में बहस करते हैं चाहे उस बहस से कुछ हासिल हो या नहीं । लेकिन किसान अलग - अलग सम्प्रदायों की बातों में नहीं पड़ते और धार्मिक सिद्धांतों की बाल की खाल नहीं निकालते। वे धर्म की मूल बात को समझते हैं। वे अपना कर्म करते हैं, मेहनत करते हैं और सीधा, सरल और सहज जीवन जीते हैं। किसान जानते हैं कि उनका मूल धर्म मेहनत करना ही है इसलिए वे इन सब बातों में न पड़कर कड़ी मेहनत करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं । इसके विपरीत हम क्षत्रिय लोग सही - ग़लत के सिद्धांतों में पड़कर राज्य हासिल करने के लिए आपस में लड़ते - झगड़ते रहते हैं।

होते कहीं वही हम लोग,
कौन भोगता फिर ये भोग ?
उन्ही अन्नदाताओं के सुख आज दुःख हरते हैं ।
हम राज्य लिए मरते हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी की पाठ्यपुस्तक में संकलित मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में से ली गई हैं। इसमें कविता की नायिका उर्मिला ने किसानों के जीवन को राज्य करने वाले अधिकारियों के जीवन से कहीं बेहतर माना है।
व्याख्या : उर्मिला कहती है कि मान लो अगर हम भी किसान होते तो राज्य की उलझनों से उत्पन्न कष्टों और दुखों को फिर कौन भोगता ? किसान हमारे अन्नदाता हैं और अपने अन्नदाता के सुख से भरे जीवन को देखकर ही हमारे सभी दुख दूर हो जाते हैं लेकिन खेद की बात है कि सब समझते हुए भी हम इस अभिमान के कारण मरे जा रहे हैं कि हम एक राज्य के अधिकारी हैं और राज्य हासिल करने के लिए आपस में लड़ - झगड़ रहे हैं।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
मरते हैं	दुःखी होते हैं
उदार	दानी
उत्सव	समारोह
सम्पन्न	धनी
सुधा	गाय का अमृत जैसा दूध
पर्व	त्योहार
भव वैभव	संसार के ऐश्वर्य
आगर	खज़ाना

शब्द	अर्थ
श्रम	मेहनत
मीन - मेख	दोष निकालना, तर्क - वितर्क करना
गोधन	गाय - रूपी धन
गर्व	अभिमान
बुद्ध	बुद्धिमान
वाद	वाद - विवाद
तजकर	छोड़कर
भोग	सुख

प्रहरी	पहरेदार
कृषक	किसान

अन्नदाताओं	अन्न देने वाले किसानों
हरते हैं	दूर करते हैं

अभ्यास
(क) विषय – बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. प्रस्तुत गीत में उर्मिला किसकी प्रशंसा कर रही है ?
उत्तर : प्रस्तुत गीत में उर्मिला किसानों के खुशहाल एवं शान्तिपूर्ण जीवन की प्रशंसा कर रही है ।

प्रश्न 2. किसान संसार को समृद्ध कैसे बनाते हैं ?
उत्तर : किसान खेतों में अपनी मेहनत से अनाज पैदा कर संसार को समृद्ध बनाते हैं ।

प्रश्न 3. किसान किस प्रकार परिश्रम रूपी समुद्र को धीरज से तैर कर पार करते हैं ?
उत्तर : किसान सहनशीलता के भंडार होते हैं। वे धीरज और कड़ी मेहनत करते हुए परिश्रम रूपी समुद्र को पार करते हैं ।

प्रश्न 4. किसानों का अपने पर गर्व करना कैसे उचित है ?
उत्तर : किसानों का अपने पर गर्व करना उचित है क्योंकि किसान समस्त संसार का अन्नदाता होते हैं । वे अपने परिवार के साथ रहते हुए संसार के सभी सुखों का भोग करते हैं। उनके पास गाय रूपी धन होता है । किसान सहनशीलता के साथ जीवन रुपी श्रम सागर को पार करते हैं।

प्रश्न 5. किसान व्यर्थ के वाद - विवाद को छोड़कर किस धर्म का पालन करते हैं ?
उत्तर : किसान व्यर्थ के वाद - विवाद को छोड़कर अपने मूल धर्म कड़ी मेहनत करना का पालन करते हैं ।

प्रश्न 6. ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में उर्मिला राज्य के कारण होने वाले किस कलह की बात कहना चाहती है ?
उत्तर : ' हम राज्य लिए मरते हैं ' में उर्मिला राज्य के कारण होने वाले गृह - कलह अर्थात पारिवारिक लड़ाई - झगड़े की बात कहना चाहती है ।

(ख) भाषा - बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :-

शब्द	विपरीत शब्द
सम्पन्न	विपन्न
धनी	निर्धन
उदार	अनुदार
रक्षक	भक्षक

शब्द	विपरीत शब्द
सुलभ	दुर्लभ
उचित	अनुचित
कठोर	कोमल
धर्म	अधर्म

2.निम्नलिखित शब्दों के दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

शब्द	पर्यायवाची शब्द
पत्नी	गृहिणी, वधू, बेगम ,जीवनसंगिनी ।
कर्षक	किसान, कृषक, अन्नदाता, हलवाहा ।
सागर	जलधि, उदधि, समुद्र, सिंधु ।
उत्स्व	पर्व, त्योहार, समारोह ।

3. निम्नलिखित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएं :-

शब्द	अर्थ	वाक्य
अन्न	अनाज	किसान अन्न पैदा करके संसार को समृद्ध बनाते हैं ।
अन्य	दूसरा	उसे अपने इलावा अन्य किसी पर भी विश्वास नहीं है ।
उदार	दयालु अथवा विशाल हृदय वाला	महाराजा रणजीत सिंह बड़े उदार राजा थे ।
उधार	ऋण	हमें उधार लेने की आदत से बचना चाहिए ।

आशा करते हैं कि शिक्षा विभाग द्वारा किया गया यह प्रयास शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में लाभदायक सिद्ध होगा।

सधन्यवाद

मार्गदर्शक :-
डॉ॰ सुनील बहल ,
स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी एवं पंजाबी) ।

लेखन एवं संकलन :-
विजेता भगत
हिन्दी शिक्षिका
स.क.सी.से. स्कूल शंकर जालंधर ।

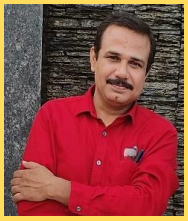

सहलेखन :-
हरीश नागपाल
हिन्दी शिक्षक
स.ह.स्कूल निज्जरां जालंधर ।

संशोधन :-
अलका रानी
हिन्दी शिक्षिका
स.सी.से. स्कूल रुड़कां कलां जालंधर ।